Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 1

ईंटें, मनकें तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

भाग - 7

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

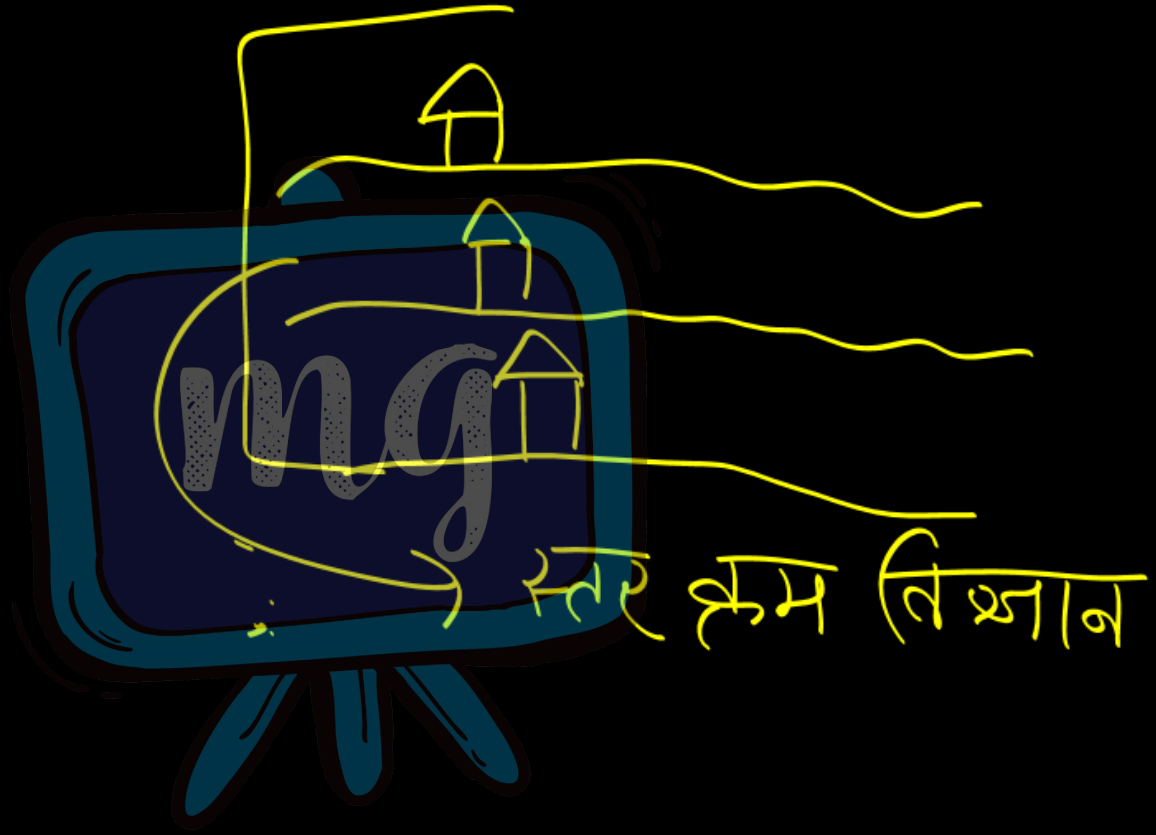

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1861

1920

एक नवीन प्राचीन सभ्यता

- 1920 के दशक में पुरातत्वविद् दयाराम साहनी ने हड़प्पा में मुहरें खोज निकाली जो आरम्भिक ऐतिहासिक स्तरों से भी अधिक प्राचीन स्तरों से संबद्ध थी तभी राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो से हड़प्पा जैसी मुहरें ही खोज निकाली। अतः ये दोनों पुरास्थल एक ही पुरातत्वविद संस्कृति के भाग थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1861- A.S.I

भा.पु.नि ➡ इन्हीं खोजों के आधार पर 1924 में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल जॉन मार्शल ने पूरे विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में एक नवीन सभ्यता की खोज की घोषणा की।

DG → कनिंघम

1920

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

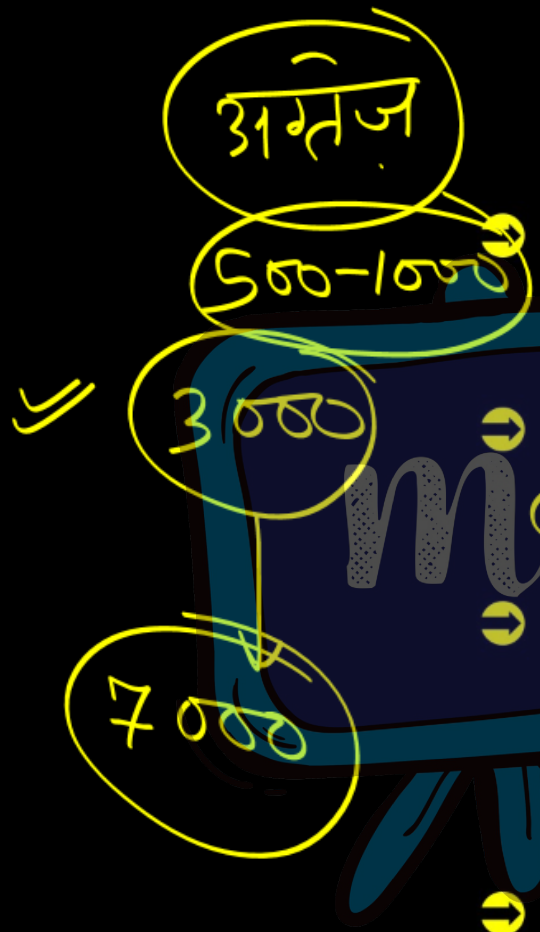

- एस. एन. राव ने अपनी पुस्तक 'द स्टोरी ऑफ इंडियन आर्कियोलोजी' में किया।
- 'मार्शल ने भारत को जहां पाया था उसे उससे तीन हजार वर्ष पीछे छोड़ा।'
- इस प्रकार विश्व के मेसोपोटामिया के समकालीन एक नयी सभ्यता की जानकारी मिली।
- मार्शल का कार्यकाल भारतीय पुरातत्व में एक व्यापक परिवर्तन का काल था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

mg







Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

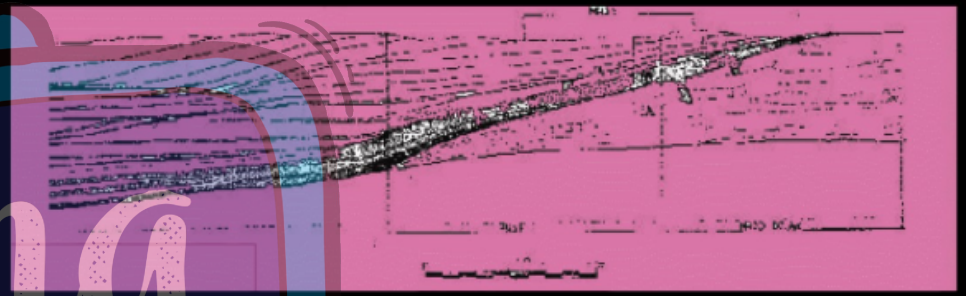

प्राचीन

मार्शल स्तर विन्यास के अनदेखा कर टीले में समान परिमाण वाले क्षैतिज इकाइयों के साथ साथ उत्खन्न का प्रयास करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नयी तकनीकें तथा प्रश्न :-

- 1944 में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल आर.ई.एम. व्हीलर बने।
- व्हीलर ने मार्शल द्वारा – एक समान क्षैतिज इकाईयों के आधार पर खुदाई की बजाय टीले के स्तर विन्यास का अनुसरण करना अधिक आवश्यक है।
- व्हीलर सेना में पूर्व बिग्रेडियर थे अतः उनहोंने पुरातत्व पद्धति में एक सैनिक परिशुद्धता का भी समावेश किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

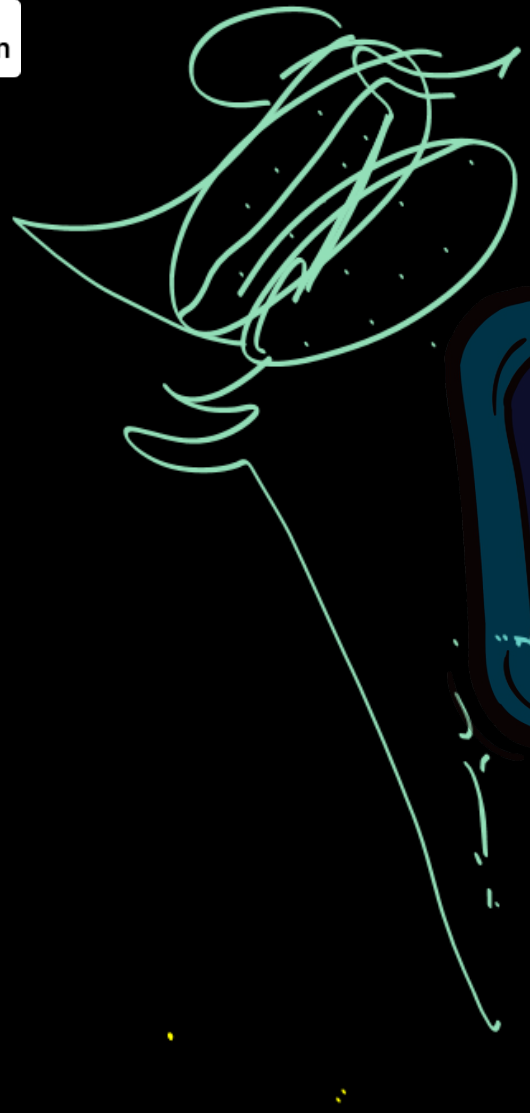

- हड़प्पा सभ्यता की भौगोलिक सीमाओं का राष्ट्रीय सीमाओं से कोई संबंध नहीं है तथा विभाजन के बाद सभ्यता के अधिकांश प्रमुख स्थल पाकिस्तान में है। इस कारण से भारतीय पुरातत्वविदों ने भारत के ही पुरास्थलों को चिन्हित करने का प्रयास किया।
- 1980 के दशक से हड़प्पाई पुरातत्व में अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भी रूचि लगातार बढ़ती जा रही है। ये लोग आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतीत को जोड़कर पूरा करने की समस्याऐं :-

- हड़प्पाई लिपि से इस प्राचीन सभ्यता को जानने में कोई मदद नहीं मिलती।
- इसके अलावा जो भौतिक साक्ष्य जैसे मृदभाण्ड, औजार, आभूषण, घरेलू सामान हो सकते हैं। इनमें कपडा, चमड़ा, लकड़ी तथा सरकंडे जैसे जैविक पदार्थ सामान्यतः सड़ जाते हैं क्योंकि ये उष्णकटिबंधीय क्षेत्र हैं।
- जो वस्तुऐं बच जाती है वे पत्थर, पकी मिट्टी तथा धातु ही है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके अलावा केवल टूटी हुई तथा अनुपयोगी वस्तुएं ही फेंकी जाती थीं। अन्य वस्तुऐं शायद पुनः चक्रित की जाती थीं।
- परिणामस्वरूप जो बहुमूल्य वस्तुऐं अक्षत अवस्था में मिलती है या तो वे अतीत में खोज गयी थी या संचयन के कारण कभी दोबारा प्राप्त नहीं की गई थी। अतः कुछ खोजें प्रारूपिक न होकर संयोजिक हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महल

राजा

खोजों का वर्गीकरण

- प्रयुक्त पदार्थों द्वारा
- उपयोगिता के आधार पर
- अप्रत्यक्ष साक्ष्यों के आधार
- संदर्भों की रूपरेखा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



व्याख्या की समस्याऐं :-

पुरातत्वविदों को सर्वाधिक समस्या धार्मिक प्रथाओं की व्याख्या में आती है।

(i) आरंभिक पुरातत्वविदों को लगता था कि जो वस्तुएं आसामान्य तथा अपरिचित हैं, ये संभवतः धार्मिक महत्व की है जैसे

(a) आभूषणों से लदी हुई नारी मूण्मूर्तियां जिनके शीर्ष पर विस्तृत प्रशाधन थे जिन्हें मातृदेवी माँ की संज्ञा दी गयी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पुरोहित राजा

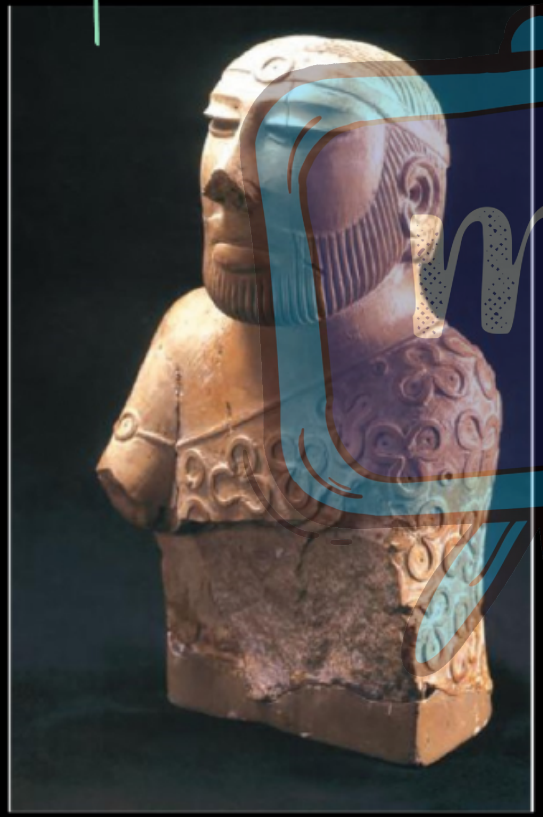

(b) पुरूषों की दुर्लभ पत्थर से बनी मूर्तियां जो एक साथ घुटने पर रखकर मानकीकृत मुद्रा में बैठा है। जैसा कि पुरोहित राजा को भी इसी प्रकार से वर्गीकृत किया गया था।

(c) कई संरचनाओं जैसे विशाल स्नानाघर तथा कालीबंगा व लोथल में मिली वेदियों को आनुष्ठानिक महत्व का माना जाना।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

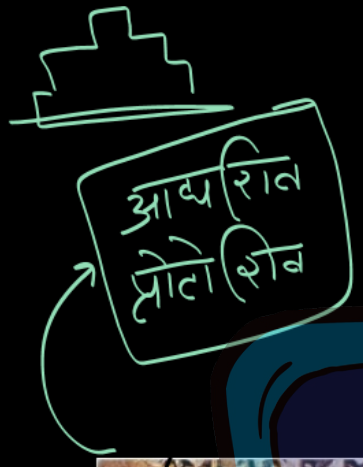



(ii) मुहरों जिन पर अनुष्ठान के दृश्य बने हैं उन्हें भी धार्मिक आस्थाओं से जोड़ा गया है।

(iii) जिन मुहरों पर पेड़ पौधों के चित्र उत्कीर्ण हैं वे प्रकृति पूजा के संकेत देते हैं।

(iv) कुछ मुहरों पर जानवरों पर एक सींग वाले जानवर – एकश्रृंगी का चित्र है कल्पित लगता है।

(v) कुछ मुहरों पर 'योगी' की मुद्रा की आकृति है जिसे कभी कभी जानवरों से घिरा दर्शाया गया है इसे 'आद्य-शिव' की संज्ञा दी गयी है।

(vi) पत्थर की शंक्वाकार वस्तुओं को लिंग कहा जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- आद्य शिव की मुहरों की व्याख्या करें तो ऋग्वेद में रूद्र नामक देवता का उल्लेख है (1500 ई. पू. – 1000 ई. पू.) इसके विपरीत रूद्र को ऋग्वेद में न तो पशुपति और न ही योगी दिखाया है। अत: मुहरों का यह चित्रण ऋग्वेद में दिये गये शिव के चित्रण से मेल नही खाता है।
- अत: धर्म के संबंध में आरंभिक तथा बाद की परम्पराऐं समान हों यह सही नहीं है। यह नीति ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ने वाली हे जिसे पुरातत्वविद उपयोग में लाते हैं। हालांकि यह चक्कियों तथा पानों के संबंध में युक्ति संगत हो सकती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

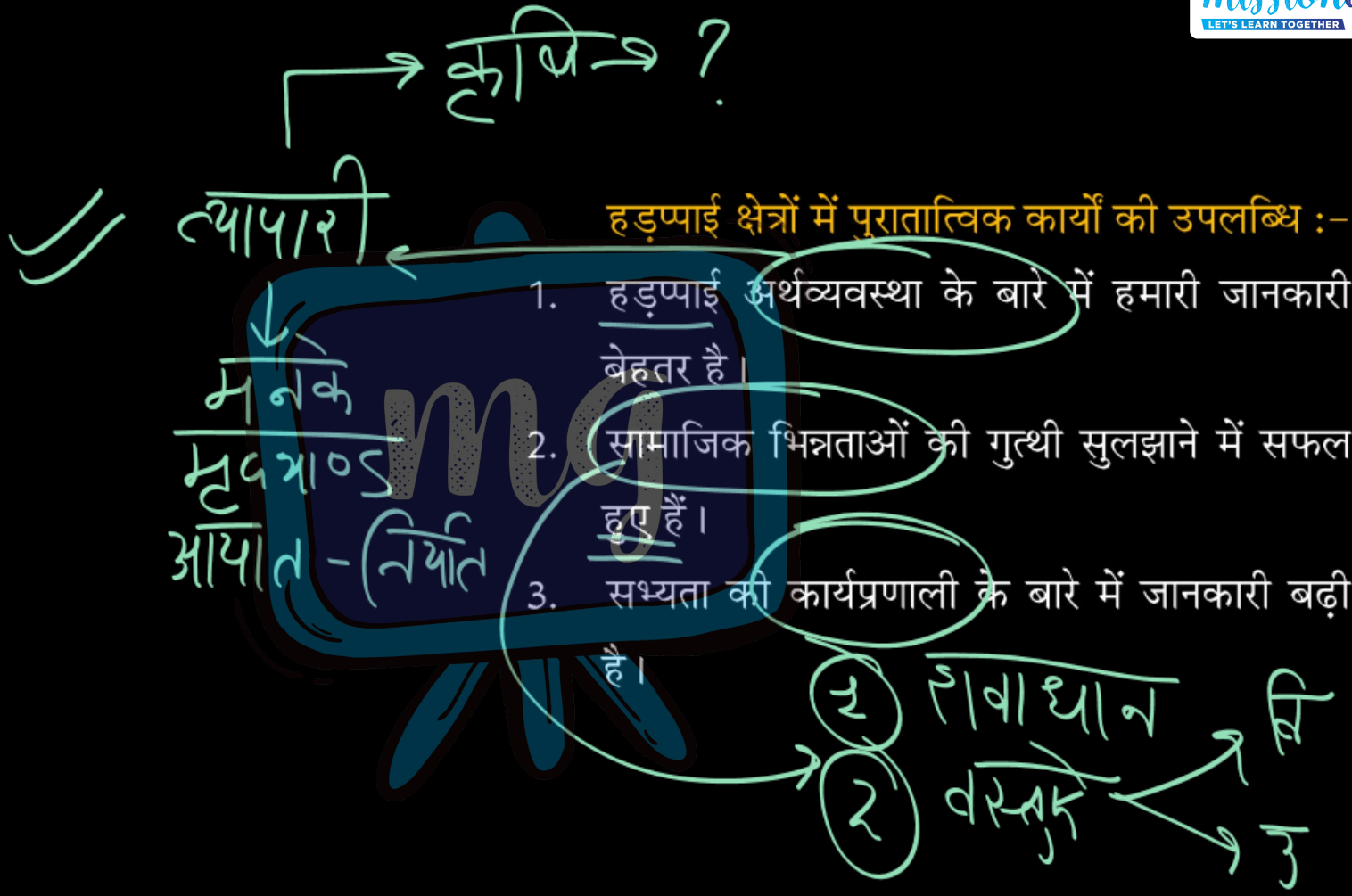

हड़प्पाई क्षेत्रों में पुरातात्विक कार्यों की उपलब्धि :-

1. हड़प्पाई अर्थव्यवस्था के बारे में हमारी जानकारी बेहतर है।
2. सामाजिक भिन्नताओं की गुत्थी सुलझाने में सफल हुए हैं।
3. सभ्यता की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी बढ़ी है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

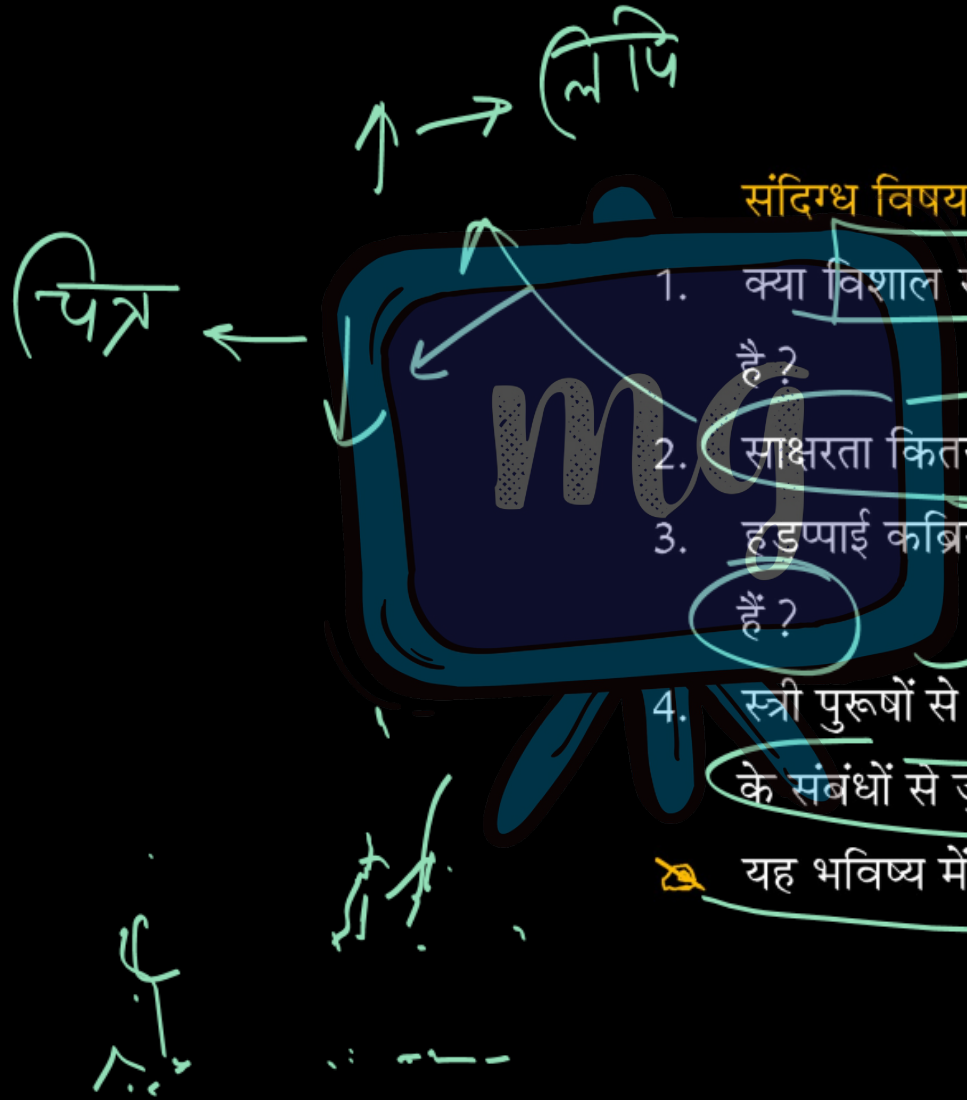

संदिग्ध विषय :-

1. क्या विशाल स्नानाघर एवं आनुष्ठानिक संरचना की है ?
2. साक्षरता कितनी व्यापक थी ?
3. हड़प्पाई कब्रिसतान में सामाजिक भिन्नताऐं कम क्यों हैं ?
4. स्त्री पुरूषों से जुड़े प्रश्न अनुत्तरित हैं तथा स्त्री पुरूषों के संबंधों से जुड़े पहलू अनुत्तरित है।

यह भविष्य में होने वाले कार्य के लिए नया क्षेत्र है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

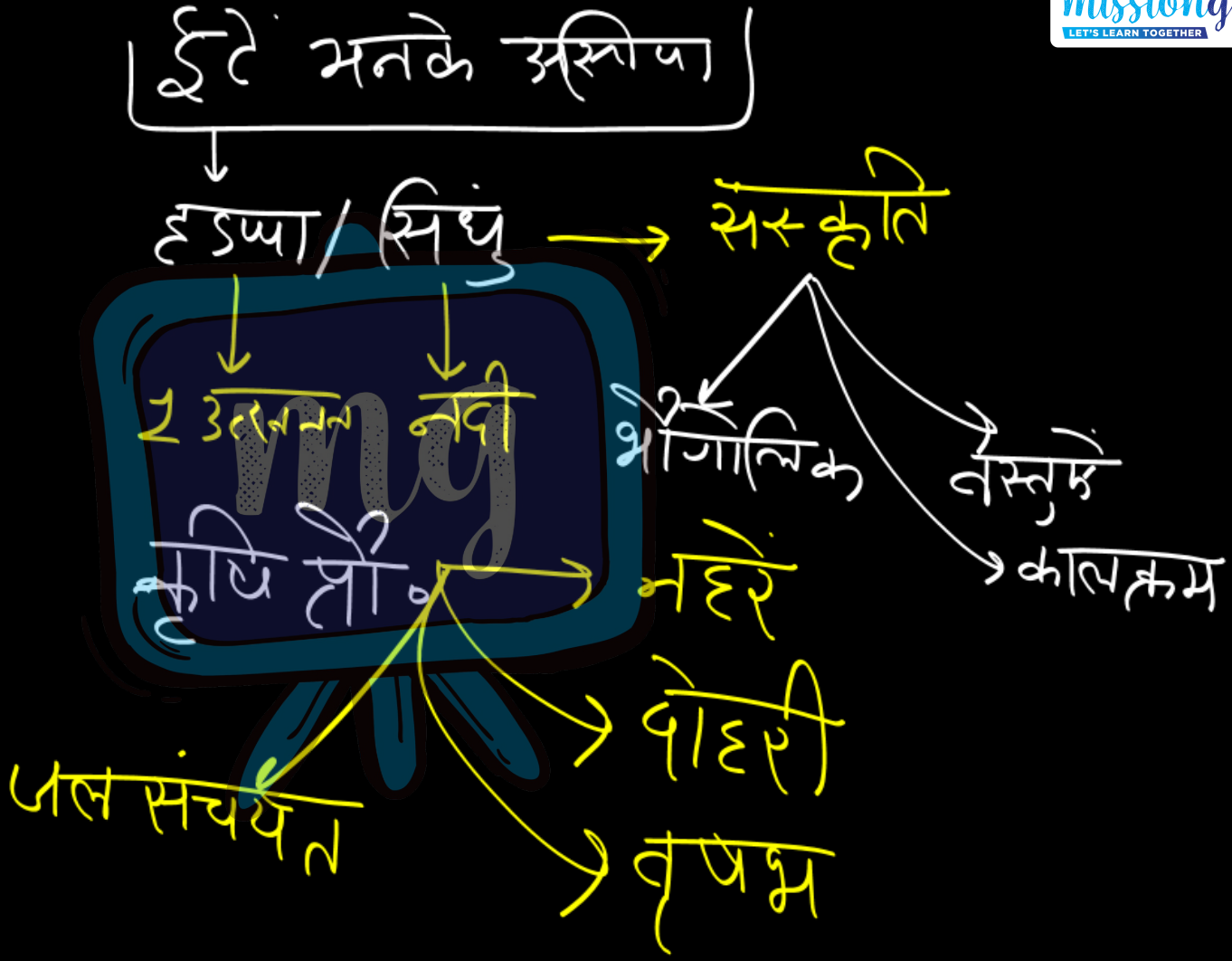

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

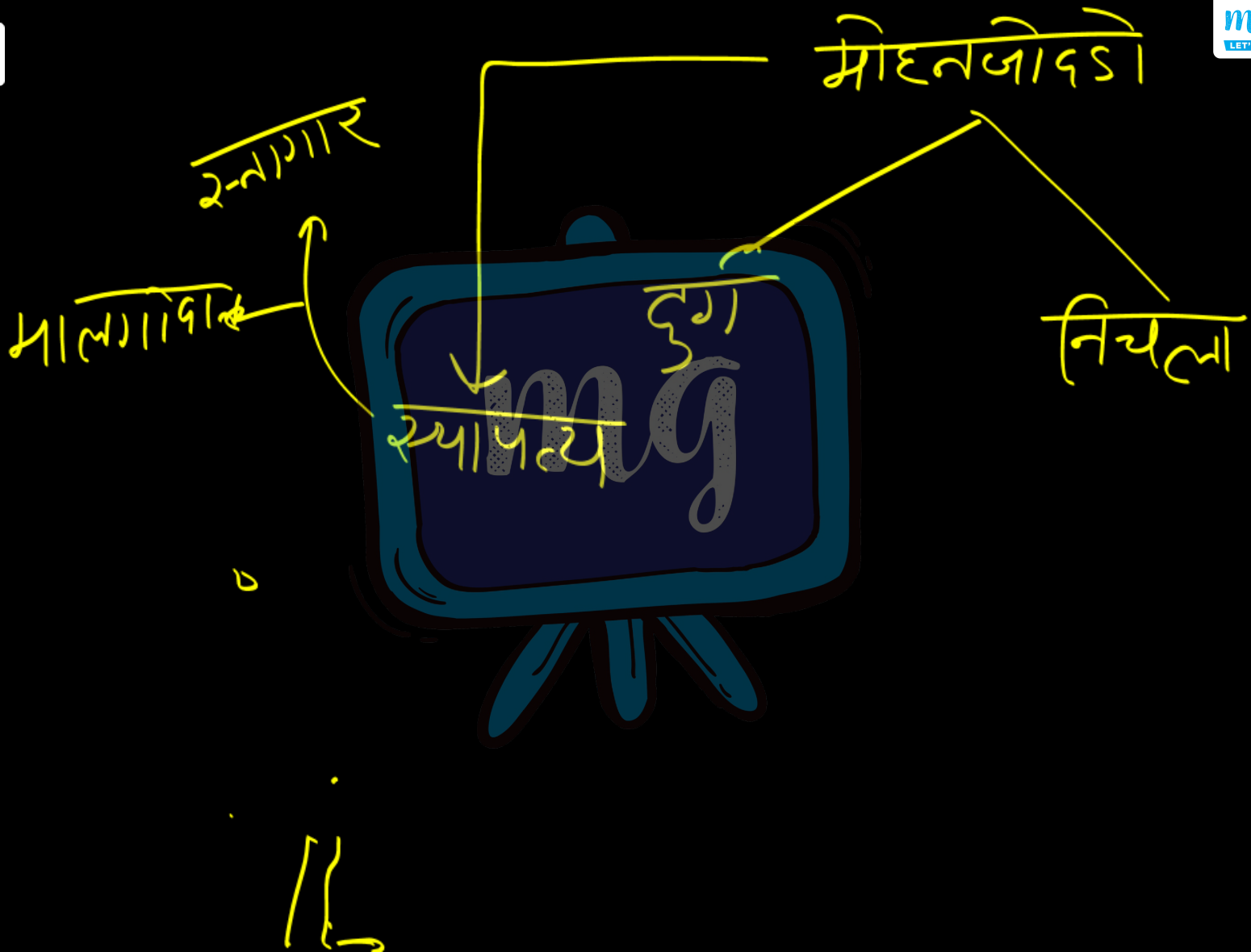

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

